एकात्म भारत के लिए
सुरेंद्र मिश्रा द्वारा प्रकाशित

@EkatmaBharat
दैनिक एकात्म भारत

एकात्म भारत

जो एकात्म है वही भारत है

अश्विन शुक्ल पक्ष तृतीया
मंगलवार विक्रम संवत् 2076

1-10-2019, इंदौर

e-paper : www.ekatmabharat.com

हिन्दू बनकर रह रहे व्यक्ति के पाकिस्तान से कनेक्शन मिले

नई दिल्ली

एमपी के सागर जिले में हिन्दू बनकर रह रहे परिवार के पाकिस्तान से कनेक्शन मिलने की खबर के बाद मकरोनिया पुलिस ने व्यक्ति, उसकी पत्नी व बेटी को हिरासत में ले लिया है। पुलिस ने यह गिरफ्तारी आर्मी इंटेलीजेंस से मिली सूचना के आधार पर की है। सागर में यह व्यक्ति विनोद बनकर निवास कर रहा था जबकि सोशल मीडिया में अपनी असली पहचान के साथ पाकिस्तान की महिलाओं से चैटिंग करता रहा।

सूत्रों के अनुसार संदिग्ध युवक ने करीब 20 साल पहले सागर में ही एक हिन्दू लड़की से शादी करने के बाद अपना नाम विनोद रख लिया और एसीपी शीट लगाने का काम करके परिवार चलाने लगा, यहां तक कि विनोद ने मकरोनिया में एक प्राइवेट स्कूल से फर्जी मार्कशीट बनवाई इसके बाद आधार कार्ड व समग्र आईडी तक हासिल कर ली। विनोद बनकर सागर के मकरोनिया इलाके में निवासरत विनोद द्वारा अपनी असली पहचान के साथ सोशल मीडिया पर पाकिस्तान की महिलाओं के साथ चैटिंग करने की जानकारी जैसे ही आर्मी इंटेलीजेंस को लगी तो उन्होने स्थानीय पुलिस को सूचना दी, जिसपर मकरोनिया पुलिस ने आज सुबह विनोद व उसकी बेटी व पत्नी को हिरासत में ले लिया।

इसके बाद सेना की खुफिया एजेंसी व पुलिस के आला अधिकारियों द्वारा विनोद व उसकी पत्नी व बेटी से लगातार पूछताछ की जा रही है। पूछताछ में विनोद ने स्वयं को अल्पशिक्षित बताते हुए कहा कि उसने हिन्दू बनने का कारण पत्नी द्वारा दबाव दिया जाना बताया है।

अयोध्या पर कोर्ट के बाहर समझौता नहीं

हिन्दू पक्ष ने न्यायालय में स्पष्ट किया

नई दिल्ली

श्रीराम जन्मभूमि मामले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई में सोमवार को सुनवाई के दौरान हिंदू पक्ष ने साफ कहा कि उन्हें मामले पर कोई मध्यस्थता (कोर्ट के बाहर समझौता) नहीं करनी है। सुनवाई के 34वें दिन सुप्रीम कोर्ट में राम लला विराजमान की तरफ से पेश वकील के बयान के बाद मध्यस्थता की कोशिशों को झटका लगा है। वहीं, मुस्लिम पक्षकार के वकील शेखर नाफडे ने दलील दी कि 1885 के मुकदमे और अभी के मुकदमे एक जैसे ही हैं, दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि 1885 में विवादित स्थल के एक जगह पर दावा किया गया था और अब पूरे हिस्से में दावा किया गया है। अब हिंदू अपने दावे के दायरे को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। पढ़िए इस मुद्दे पर हुई सुनवाई

जस्टिस अशोक भूषणः लेकिन जब दोनों केस के विषय को देखा जाए तो दोनों के कंटेंट में अंतर तो दिख रहा है उस अंतर को देखा जा सकता है।

नाफडेः रेस ज्यूडीकाटा नियम (एक ही तरह के विषय पर दो बार वाद दायर नहीं किया जा सकता) को हाई कोर्ट ने नजरअंदाज कर दिया था।

शेखर नाफडेः जहां तक 1885 की बात है तो उस वक्त विवादित इलाके में हिंदुओं का प्रवेश सिर्फ बाहरी आंगन तक सीमित था। बाहरी आंगन में स्थित राम चबूतरा और सीता की रसोई तक हिंदुओं की पहुंच हुआ करती थी। राम चबूतरा बाहरी आंगन में स्थित था और हिंदू उसी राम चबूतरा को जन्मस्थान कहते थे। बाकी तमाम जगह मस्जिद की थी और मुस्लिम मस्जिद में नमाज पढ़ते थे। मस्जिद की जगह के संदर्भ में कोई दावा नहीं था।

नाफडेः मुस्लिम पक्षकारों के लिए ये ओपन है कि वह महंत के लोकस (पक्षकार होने पर) पर सवाल करें।

सुप्रीम कोर्ट जस्टिस एसए बोबडेः निर्मोही अखाड़ा या फिर हिंदू पक्षकारों ने ऐसा दावा नहीं किया है कि उनका प्रतिनिधित्व रघुबर दास कर रहे थे। महंत दास ने भी ये दावा नहीं किया था कि वह पूरे हिंदुओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

नाफडेः लेकिन महंत हिंदुओं के ग्रुप हैं और इस तरह वह प्रतिनिधित्व करते हैं। महंत जब कहता है कि वह पूजा स्थान का महंत है तो वह पूजा स्थल व मठ का न्यायिक प्रतिनिधि हो जाता है।

हिंदू पक्षकार के वकील के. परासरणः विवादित जगह पर मूर्ति थी या नहीं थी। ये उतना महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है। पूजा तमाम

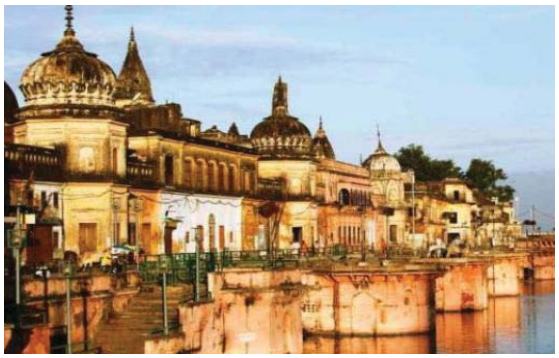

तरह से होते हैं। कहीं मूर्ति होती है कहीं मूर्ति नहीं होती है। दरअसल पूजा का मकसद होता है कि देवत्व की पूजा हो। मूर्ति नहीं होने के आधार पर जन्मस्थान पर सवाल नहीं उठाया जा सकता। इस तरह का सवाल उठाना उचित नहीं है। हिंदू धर्म के मुताबिक एक गॉड सुप्रीम हैं उनके अलग-अलग रुपों की मंदिरों में पूजा होती है। मुख्य न्यायाधीश ने हिन्दू पक्ष को अपनी बहस दो दिन में पूरी करने को कहा है।

भूतहा है जमाली कमाली मस्जिद

सुनवाई के दौरान मुस्लिम पक्ष के वकील मोहम्मद निजाम पाशा ने मस्जिद में फूल न होने के मामले में जिस जमाली कमाली मस्जिद का उदाहरण दिया है। उसे भूतहा माना जाता है। यह मस्जिद दिल्ली में कुतुब मीनार के पास स्थित है और इसमें रात में नमाज पढ़ने की मनाही है। माना जाता है कि यहां रात में जिन्नात इबादत करते हैं। कहते हैं कि यहां रात में आवाजें आती हैं।

मूल रूप से ये जमाली और कमाली का मकबरा है। कमाली का परिचय अज्ञात है। अमेरिकी लेखिका ने अपनी पुस्तक जमाली कमाली ए टेल ऑफ पेशन इन मुगल इंडिया में उन्हें एक-दूसरे का पुरुष प्रेमी बताया है। लोगों को इस मस्जिद में अज्ञात परछाईं का अहसास हुआ है। इसके चलते भी इसे भूतहा कहा जाता है।

बड़े षड्यंत्र का हिस्सा है द फैमिली मैन जैसे शो, वेब सीरीज संदेह के दायरे में

मुंबई

श्रीनगर के लाल चौक का दृश्य। रात का समय है, कर्फ्यू लगा हुआ है। जांच एजेंसी एनआईए के दो अधिकारी चाय पीते हुए आपस में बात कर रहे हैं। महिला अधिकारी दिल्ली से गए पुरुष साथी से कहती है "हम यहां पर जुल्मों-सितम के नाम पर जश्न मना रहे हैं। स्पेशल पावर एक्ट के दम पर कश्मीरी लोगों को दबाया जा रहा है। हम उनके फोन और इंटरनेट बंद कर देते हैं। यहां के लोग हमारे रहमो-करम पर जी रहे हैं। किसी को खुलकर आजादी से जीने न देना अगर जुल्म नहीं है तो क्या है?" दिल्ली से गया खुफिया अधिकारी अपनी महिला सहकर्मी की इस बात से काफी प्रभावित दिखाई दे रहे हैं। महिला अधिकारी आगे कहती है, "आखिर हममें और उन मिलिटेंटों में फर्क क्या है?" यह दृश्य हाल ही में जारी वेब सीरीज 'द फेमिलीमैन' का है और देश की सेना को आतंकवादियों जैसा कहने का ये कारनामा हमारे ही देश के फिल्मकारों का है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आधार पर कैसा नेरेटिव खड़ा किया जा रहा है। फिल्मों और टीवी धारावाहिकों के बाद भारत विरोध और जिहाद का ये बिल्कुल नया रूप है।

देशविरोधी एजेंडा चलाने के लिए जनसंचार माध्यमों का भरपूर उपयोग हो रहा है, इस कड़ी में नया नाम जुड़ गया है वेब सीरीज का। वेब सीरीज यानि फिल्मनुमा धारावाहिक, जिन्हें अमेजन प्राइम वीडियो, नेटफ्लिक्स जैसे मोबाइल ऐप के माध्यम से देखा जा सकता है। क्योंकि ये मोबाइल फोन पर देखे जाते हैं, इसलिए युवा पीढ़ी में काफी लोकप्रिय हैं। देश विरोध ही नहीं, इन वेब सीरीज में हिन्दू धर्म के खिलाफ एक प्रायोजित दुष्प्रचार स्पष्ट देखा जा सकता है। वेब सीरीज सेंसर बोर्ड के तहत नहीं आती, इसलिए इनकी सामग्री पर कोई नियंत्रण भी नहीं है। वेब सीरीज में गाली-गलौज और अश्लील दृश्यों की भरमार रहती है। कुछ समय पहले 'सेक्रेड गेम्स' और 'घोल' नाम से वेब सीरीज आई थी, जो सीधे-सीधे हिन्दुओं से घृणा का उदाहरण है। 'सेक्रेड गेम्स' में हिन्दू धर्म को ऐसे दिखाया गया है जो धरती को नष्ट करना चाहता है। द फेमिलीमैन' की कहानी में सीरिया से ट्रेनिंग लेकर आए आईएसआईएस और कश्मीरी आतंकवादियों तक के मानवीय पक्षों को उभारा गया है। बताया गया है कि सभी आतंकवादी हिन्दुओं, पुलिस या सेना के अत्याचार से परेशान होकर हथियार उठाने को मजबूर हुए। देश में हर तरह मुसलमानों को दबाया और कुचला जा रहा है। उनके साथ अत्याचार हो रहा है। 'द फैमिलीमैन' के अनुसार इस्लामी आतंकवाद का सबसे बड़ा कारण 2002 के गुजरात दंगे थे। ज्यादातर आतंकवादी उसी पृष्ठभूमि में तैयार हुए। वो इसलिए आतंकवादी बने क्योंकि गुजरात दंगों में उनके किसी रिश्तेदार की मौत हुई थी। सवाल उठता है कि इन दंगों में करीब 300 हिन्दुओं की भी हत्या हुई थी। हिन्दुओं के परिवार से आज तक कोई आतंकवादी क्यों नहीं निकला? गोधरा में जिन कारसेवकों को जिंदा जला दिया गया था, उनके परिवार वालों ने हथियार क्यों नहीं उठाया? अगर आतंकवादी बनने की वजह गुजरात दंगे हैं तो क्या उससे पहले देश में इस्लामी आतंकवाद नहीं था? द फेमिलीमैन' में करीम नाम के एक छात्र को दिखाया गया है जो कॉलेज के हॉस्टल में रहता है। वह एक कार्यक्रम में आए हिन्दू मेहमानों को धोखे से बीफ खिलाने की साजिश रचता है। लेकिन इसे उकसाने की कोशिश के बजाय 'सत्याग्रह' की तरह दिखाया गया। क्या वेब सीरीज की इन कहानियों के पीछे कुछ बड़ा षड्यंत्र नहीं है? उम्मीद है कि सुरक्षा एजेंसियों की नजर इस नए तरह के खतरे की तरफ जरूर होगी और जल्द ही इस षड्यंत्र की सच्चाई के सामने आ जाएगी।